प्रातः क्लास 12-4-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

****

ओमशान्ति। अभी बच्चों को घर भी याद पड़ता है। बाप तो यही बात सुनावेंगे घर की और राजधानी की। और बच्चे भी इन बातों को समझते हैं कि हमारा घर कौन सा है। हम आत्माओं का घर कौन सा है। हम आत्मायें क्या है यह भी अच्छी रीत समझ गये हो। किसने समझाया है? बेहद के बाप ने। हरेक भाषा में तो बहुत सहज है बाबा बाबा समझने का। बच्चे समझ गये हैं कि बाबा हमको आकर पढ़ाते हैं। बाप कहां से आते हैं? परमधाम से। ऐसे नहीं कहेंगे पावन बनाने कोई पावन दुनिया से आते हैं। नहीं। बाप कहते हैं मैं सतयुगी पावन दुनिया से नहीं आता हूं। मैं तो घर से आया हूं। जिस घर से तुम बच्चे भी आये हो पार्ट बजाने। मैं भी ड्रामा प्लैन अनुसार हर 5000 वर्ष बाद घर से आता हूं। मैं रहता ही हूं घर में। परमधाम में। बाप समझाते भी ऐसे सहज हैं जैसे कि कोई शहर से गांव से आया हूं। कहते हैं जैसे तुम आये हो पार्ट बजाने हम भी वहां से आये हैं पार्ट बजाने ड्रामा प्लैन अनुसार। मैं नालेजफुल हूं। सभी बातों को मैं जानता हूं ड्रामा प्लैन अनुसार। कल्प2 मैं ही तुमको यह बातें समझाता हूं जब तुम काम चिता पर चढ़ कर काले हो भसम हो जाते हो। आग में मनुष्य काले हो जाते हैं ना। तुम भी सांवरे हो गये हो। जब तुम गोरे थे तो शरीर भी गोरा था। अभी शरीर भी सांवरा है। यथा राजा रानी सांवरे तथा प्रजा। तुम बच्चे कितना अच्छे थे। महाराजा-महारानी ल0ना0 कितने अच्छे थे। इनकी सारी डिनायस्टी काम चिता पर चढ़ने से फिर सांवरे बन पड़ती है। पहले नम्बर में जो गोरे थे वही फिर काले बने हैं। ल0ना0 राम सीता आदि को दिखलाते भी ऐसे ही हैं। कहां काला कहां गोरा बनाते हैं। दोनों ही निशानियां हैं फिर अर्थ को ही नहीं समझते। तुम बच्चे अभी राज को समझ गये हो। सभी काम चिता पर बैठ काले हो गये हैं। ताकत ठंडी हो गई है। आत्मा की बैटरी ऐसी न हो जो एकदम डिस-चार्ज हो जावे और मोटर खड़ी हो जावे। इस समय सभी की डिस-चार्ज होने का समय आ गया है। प्रायः सारे मनुष्य मात्र के। तब ही बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार मैं आता हूं। ऐसे भी नहीं आने से ही बहुत बच्चे स्टार्ट हो जाते हैं। धीरे2 ही स्टार्ट होते जाते हैं। जो आदि सनातन देवी देवता थे और चन्द्रवंशी के थे फिर उन्हीं की ही बैटरी चार्ज होती है। तुम्हारी बैटरी अभी चार्ज होनी है जरूर। ऐसे भी नहीं सुबह को यहां आकर बैठने से बैटरी चार्ज हो जायेगी। नहीं। बैटरी की चार्ज तो उठते-बैठते चलते फिरते हो सकती है। याद में रहने से। तुम पहले2 पवित्र आत्मा सतोप्रधान थे। सच्चा सोना, सच्चा ज़ेवर था। अभी तो तमोप्रधान बने हो। अभी फिर आत्मा पवित्र बनती है तो शरीर भी पवित्र मिलेगा। यह तो बड़ी सहज बात पवित्र होने लिए इसको योग अग्नि की भट्ठी भी कह सकते हैं। सोने को भट्ठी में डालते हैं। यह है सोने को शुद्ध बनाने की भट्ठी। बाप को याद करने की भट्ठी को याद रखनी है। पवित्र तो जरूर बनना ही है। याद नहीं करेंगे तो उतना पवित्र नहीं बनेंगे। फिर हिसाब किताब तो चुकुत करना ही है। क्योंकि क्यामत का समय है न सभी को हिसाब किताब चुकुत कर वापस घर जाना है। बुद्धि में घर की याद भी बैठी हुई है। और किसकी भी बुद्धि में नहीं होगा। यह तो आत्मा को ही ईश्वर कह देते हैं। उसको घर नहीं समझते हैं। तुम इस बेहद के ड्रामा के एक्टर्स हो। ड्रामा को तो तुम अच्छी रीत जान गये हो। बाप ने समझाया है अभी 84 का चक्र पूरा होता है। अभी जाना है अपने घर। आत्मा अभी पतित है इसलिए घर जाने लिए पुकारती है। बाबा हमको पावन बनाओ। नहीं तो हम जा नहीं सकते। तो बाप ही बैठ यह बातें बच्चों को समझाते हैं। यह भी बच्चे समझ गये हैं सभी उनको पिता ही पिता कहते हैं। ऐसे भी नहीं टीचर भी कहते। यूं तो कृष्ण को टीचर से हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो कृष्ण तो खुद ही पढ़ता था सतयुग में। कृष्ण कब किसका टीचर बना नहीं है ऐसे भी नहीं पढ़ कर फिर टीचर बना। नहीं। कृष्ण के बचपन से लेकर बुढ़ेपन तक सारी 84 जन्मों की कहानी तुम बच्चे समझ जाते हो। और लोग तो कृष्ण को भगवान कहते हैं। जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण है। राम के कहेंगे जिधर देखो राम ही राम है। सुद्ध ही भूल गया है। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। तुम भी अभी

समझते जाते हो। भारत का यह प्राचीनयोग और ज्ञान मशहुर है। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। ज्ञान का सागर है ही एक बाप। वह तुम बच्चों को ज्ञान देते हैं तो तुमको भी ज्ञान सागर कहेंगे प्र नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सागर कहें वा नदी कहें पानी तो फिर भी सागर से आता है। वह है पानी की गंगाएं तुम हो ज्ञान गंगाएं। बड़े नहरे भी हैं। इस हालत में ज्ञानवान ही कहेंगे। बाबा ने समझाया है यहां मेल-फिमेल का प्रश्न नहीं है। जैसे बाप ज्ञान सागर है, बाप के बच्चे भी ज्ञान सागर हैं। आत्मा ही ज्ञान सुनती है। इसमें मेल फिमेल की बात नहीं। वह भी ज्ञान सागर परमआत्मा है। यह आत्मा भी उन द्वारा मास्टर ज्ञान सागर बनती है। गंगाएं भी नहीं कहा जाये। इससे भी मुंझ हो जाती है। मास्टर ज्ञान सागर ही कहना ठीक है। तुम सभी बच्चे हो। बाप बच्चों को पढ़ाते हैं। फिमेल की बात ही नहीं। मास्टर ज्ञान सागर कहेंगे आत्मा के रूप में। गंगाएं फिर तो नाले भी हो। नाला अक्षर अच्छा नहीं है। इसलिए मास्टर ज्ञान सागर ही कहें। वर्सा भी तो तुम आत्माएं लेते हो। इसलिए अभी बाप कहते हैं बच्चे अभी देही अभिमानी बनो। अपने को आत्मा समझो। जैसे मैं परमआत्मा ज्ञान का सागर हूं, वैसे तुम भी मास्टर ज्ञान के सागर उनको परमपिता कहा जाता है। ड्रामा में उनकी डियुटी सब से ऊंची है। राजा रानी की डियुटी सब से ऊंची चली है ना। तुम्हारी भी ऊंच रूही गर्द है। यहां तुम समझते हो हम आत्माएं पढ़ती हैं। परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं। मेल-फिमेल अलग2 की कोई बात ही नहीं। बाप कहते हैं मैं सभी आत्माओं को पढ़ाता हूं। इसलिए अभी देही अभिमानी बनो। सभी ब्रदर्स हो जाते। मास्टर ज्ञान सागर ही कहेंगे। बच्चे को भी मास्टर कहते हैं। मालिक बन जाते हैं। बाप भी कितनी मेहनत करते हैं। अभी तुम आत्माएं ज्ञान ले जाती हो। फिर वहां प्रारब्ध चलती है। वहां तो सभी का ब्रदरली प्रेम रहता है। ब्रदरलीप्रेम बहुत अच्छा चाहिए। किसको रिगार्ड देना किसको नहीं देना ऐसा नहीं। सभी भाई हैं ना। भाई एक दो में भाईपने का रिगार्ड नहीं देते हैं। नाम तो गाया हुआ है ना कहते हैं सभी भाई2 हैं। हिन्दु मुसलमान भाई2 हैं। बहिन भाई नहीं कहते। भाई2 कहना ठीक है। आत्मा यहां पार्ट बजाने आती है। वहां भी भाई2 होकर रहते हैं। घर में जरूर सभी भाई2 होकर रहेंगे। भाई बहिन का चोला तो यहां ही छोड़ना पड़ता है। भाई2 का ज्ञान बाप ही आकर देते हैं। आत्माओं को पढ़ाते हैं। देखना भी ऐसे हैं। आत्मा भृकुटि के बीच में रहती है तो तुमको भी यहां नजर डालनी होती है। हम आत्मा शरीर रूपी तख्त पर बैठे हैं यहां। यह सिंहासन वा अकाल तख्त ठहरा। आत्मा को कब काल खाता नहीं। सभी के तख्त यहां हैं भृकुटी के बीच में। यह तख्त है जिस पर वह अकाल आत्मा बैठती है। कितनी समझ की बात है। अपने को आत्मा समझना है। बच्चे में भी आत्मा जाती है तो भृकुटि के बीच में ही है। वह छोटा तख्त फिर बड़ा तख्त होता है। बच्चों की बुद्धि में है हम आत्मा एक शरीर छोड़ फिर गर्भ में जावेंगे। भृकुटि में जाकर प्रवेश करेंगे। बाप तो सभी दुःखों से दूर कर देते हैं। सतो आदि कुछ भी नहीं। दुःख की बात ही नहीं। यहां गर्भ जेल में आत्मा को भोगना भोगनी पड़ती है। इसलिए इलाज करती है हम फिर कब पाप नहीं करेंगी। आधा कल्प पापात्मा बनना ही होता है। अभी बाप द्वारा फिर पावन धर्मात्मा बनती हो। पतित से पावन। जो बहुत दान पुण्य आदि करते हैं उनको पुण्यात्मा कहते हैं। तुम ऐसे नहीं कहेंगे यह पुण्यात्मा हैं। नहीं। पवित्र आत्मा है। वहां भी पवित्र आत्मा हैं। हां यह जरूर है दान पुण्य भी किया है पवित्र आत्मा भी है पुण्यात्मा भी है। यहां अपवित्र आत्मा पापात्मा है। अक्षर भी शुभ निकलने हैं जिस से अर्थ पूरा निकले। भारत का नाम मशहुर है। कहते हैं भारत में जितना दान पुण्य करते हैं इतना और और कहीं नहीं। तुम तन मन धन सभी कुछ बाप को दे देते हो। तुम यहां ही बाप को सब कुछ अर्पण कर देते हो। इतना दान करने कोई जानता नहीं। दान लेने और देने वाला भी आता यहां भारत में ही है। यह सभी सूक्ष्म बारीक बातें हैं जो भारत में ही होती हैं। भारत कितना अविनाशी खण्ड बना हुआ है। और सभी खण्ड खत्म हो जाने हैं यह ड्रामा कैसे बना हुआ है वह भी

तुम्हारी बुधि में है। दुनिया नहीं जानती। इसको नालेज ही कहें तो और भी अच्छा है। नालेज है गॉड आफ इनकम। इनसे इनकम बहुत है। बाप को याद करो वह भी नालेज देते हैं। फिर सृष्टि चक्र की यह नालेज देते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो यह भी नालेज है। यह ज्ञान कब तुमने सुना न है। अभी तुम जानते हो हम जन्म-जन्मान्तर भक्ति मार्ग में रहे हैं। मनुष्यों द्वारा ही सुनते आये हैं। विदेही से नहीं सुना है। अभी बाप तुम बच्चों को अच्छी रीत समझाते हैं। अपने को आत्मा समझो। तुम वर्सा भी बाप से लेते हो। शरीर का अभिमान निकल जाना चाहिए। हम सभी आत्मायें बाप से वर्सा ले रही हैं ज्ञान का। पढ़ाई का। याद का। इसमें मेहनत है। हम आत्माओं को अभी वापस जाना है। शरीर का भान निकालना है। इस पुरानी शरीर से और और पुरानी दुनिया से उपराम रहना है। देह सहित जो कुछ भी देखते हो वह सभी खलास हो जाना है। अभी हम ट्रान्सफर होते हैं। यह तो बाप ही बता सकेंगे। कोई मनुष्य तो बता न सके। सभी आत्माओं का बाप ही बतलाते हैं। मेहनत लगती है। बहुत बड़ा इम्तहान है। जो बाप ही आकर पढ़ाते हैं। इसमें किताब आदि भी कोई बात नहीं रहती। बाप को याद करना है। बाप 84 का चक्र तो समझा देते हैं। ड्रामा के डेवलुशन को भी नहीं जानते हैं। बिलकुल घोर अंधियारे में हैं। अभी तुम जानते हो। मनुष्य तो जानते ही नहीं हैं। जितनी मेहनत करते हो। फिर भी विश्वास करते नहीं हैं कि भगवान आकर इन्हीं को पढ़ाते हैं। जरूर कोई ने आवेंगे ना। उन्होंने फिर कृष्ण को पकड़ लिया है। जो बैठ किताब बनाईतो सोचा होगा किसका नाम देवें। जानते तो कुछ भी नहीं हैं। कृष्ण चित्र भी कैसे बैठ बनाये हैं। वह तो शिव मंदिर आबाजर में कनेक्शन है तथा। कुछ भी नहीं जानते। अभी बाप आत्मा को ज्ञान देते हैं। जब देते हैं ऐसे2 करो। जो मनुष्य समझ जायें। तुम्हारे लिए बहुत सहज है। नम्बरवार तो हो ही। स्कूल में भी नम्बरवार तो होते हैं ना। रजाई में नम्बरवार होते हैं। इस पढ़ाई से बड़ी राजधानी स्थापन हो रही है। यह भी तुम बच्चों को खुशी है। पुरुषार्थ ऐसा करना है। हम राजा बनें। इस समय तुम पुरुषार्थ करते हो। फिर कल्प2 करते रहेंगे। इसको ईश्वरीय लाटरी कहा जाता है। कोई को थोड़ी कोई को बड़ी लाटरी होती है। राजाईयों भी लाटरी है ना। जो आत्मा जैसा कर्म करती है ऐसा लाटरी मिलती है। कोई गरीब बनते हैं कोई सेठ बनते हैं। सभी को लाटरी तो मिलती है ना। इस समय तुम बच्चों को सारी लाटरी बाप से मिलती है। ऐसा जो पुरुषार्थ करेंगे। उस समय के पुरुषार्थ पर ही बहुत मदार है। नम्बरवन पुरुषार्थ के बाद फिर तो पहले नम्बर से स्वच्छ नहीं तो धीमापन से ही स्वच्छ बनेंगे। वह पढ़ते भी अच्छा है। पवित्र बन जाते हैं। तुम बच्चे जानते हो जितना हम बाप को याद करेंगे उतना ही डाक्टरी= नालेज की धारणा करेंगे। और बहुतों को समझा कर अपना प्रजा बनायेंगे। कहीं भी तुम जाओ, भल कोई भी धर्मवाला हो बच्चे भी तुम मिलते भी उन्हों को बाप का परिचय देना है। आगे चल कर बड़े होंगे तो विनाश सामने खड़ा है। तो विनाश के समय इतने मनुष्यों को कौन रक्षा करे। तुम्हारे लिए रहना है तुम्हारी आत्मा हो ना। बाकी फादर किसको कहां भटकाते हैं। अभी बाप आत्माओं को कहते हैं मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। यह बाप की सर्व का शिक्षक है। और तुम आत्मा बाप को याद करो तो तुम्हारा गाईड बन तुमको ले जायेंगे सुखधाम। बाकी दुनिया तो जरूर विनाश होती रहेगी। तो नेस्त का भी प्रश्न नहीं उठता। हरेक को पार्ट जरूर बजाना ही है। आत्मायें सभी हैं अविनाशी। विनाश होने की नहीं है। यह भी ड्रामा चलता रहता है। जो भी 500 करोड़ आत्मायें हैं सभी अविनाशी हैं। आत्मा कब विनाश नहीं होती। बाकी यहां आने लिए बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। फिर वे चले जायेंगे। वहां सभी आत्मायें समझेंगे जरूर बड़े2 राजा रानी होंगे। वापस तो सभी को जाना ही है। तुम्हारे विनाश सभी को बुद्धि में टच होगा। तब तो [illegible] जानो। जानेंगे तो जरूर विनाश भी [illegible] दे। उनमें भी कई सदगति पाई होती हैं जरूर पतायेंगे ना। जरूर फिर कहते हैं [illegible]

तुमरी गत मत तुम्हीं जानो। हम नहीं जानते हैं। यह भी कोई बात नहीं। अभी बाप कहते है इस श्रीमत से तुम्हारी गती होती है। तुमरी गत-मत ... अभी तुम समझते हो जो बाबाजानते हैं वह हमको सिखलाते हैं। तुम कहेंगे हम बाबा को जानते हैं। वह बाते हैं कि तुमरी गत-मत तुम्ही ~~जो~~ जानो। तुमसे नहीं कहेंगे। बुधि में बैठने में भी टाईम लगता है। फट से नहीं बुधि में आता है। सम्पूर्ण तो कोई भी नहीं बना हैं। सम्पूर्ण बन जाये फिर तो यहां चले जावें। जाना तो नहीं हैं। सम्पूर्ण कोई भी बन नहीं सकते हैं झट। यह भी कहते हैं मुझे अलन बनना है। पुरुषार्थ कर रहे हैं। भल पहले जोर से वैराग्य आया। देखा डबल सिरताज बनता हूं। यह भी ड्रामा प्लैन अनुसार बाबा ने दिखाया मैं तो झट खुश हो गया। खुशी के मारे सब कुछ छोड़ दिया। विनाश भी देखा और चतुर्भुज रूप भी देखा। समझा अभी राजाई मिलती है। थोड़े ही रोज में यह सभी विनाश हो जावेंगे। ऐसी नशा चढ़ गया। परन्तु अभी तो देखने में आता है यह तो बहुतों को राजाई मिलनी है। एक हम जाकर क्या करेंगे। यह ज्ञान अभी मिलता है। पहले तो खुशी का पारा चढ़ गया अभीसमझते हो यह तो ठीक है। राजधानी बनेंगी। बाकी पुरुषार्थ तो सभी को करना है। तुम पुरुषार्थ के लिए ही बैठे हो।

सुबह को तुम याद में बैठे थे। यह बैठना भी अच्छा है। जानते हो बाबा आया। बाप आया, दादा आया वह तो गुर जाने गुड़ की गोथली जाने। एक एक ~~बच्चे~~ बच्चे को देखते रहेंगे। एक एक को बैठ कर साकाश देते हैं। योग की अग्नि है ना। योग अग्नि से उनके विकर्म विनाश हो जाये। जैसे कि बैठ कर लाईट देते हैं। एक एक आत्मा को सर्चलाईट देते जावेंगे। बैठेंगे ही ऐसे। या बाप कहते हैं मैंऐसे बैठता हूं। ऐसे बैठ कर एक एक आत्मा को कैरेन्ट देताहूं तो ताकत भरती जाये। अगर किसकी बुधि बाहर में भटकती होगी तो फिर कैरेन्ट कोई कैच कर न सकेंगे। बुधि कहां न कहा भटकती रहेंगी। उनको मिलेगा फिर क्या। कहते हैं ना मिठरा घूर त घूरारं। (प्यार करो तो प्यार करेंगे) तुम प्यार करेंगे तो प्यार पावेंगे। बुधि बाहर भटकती रहेंगी तो बैटरी चार्ज ही नहीं होगी। बाप बैटरी को चार्ज करने आते हैं। उनका फर्ज है सर्विस करना। बच्चे सर्विस अंगीकार करते हैं बा नहीं वह तो उनकी आत्मा ही जाने। किस खयालात में बैठते हैं। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। मैं भी परम आत्मा हूं। मुझ बैटरी साथ तुम योग लगाते हो। मैं भी साकाश दुंगा। बहुत ही प्यार से एक दाक को साकाशदेता हूं। तुम तो बैठेंगे बाबा को याद करने। बाप कहते हैं मैं एक एक आत्मा को साकाश देता हूं। सामने बैठ लाईट देते हैं। तुम तो ऐसे नहीं करेंगे। जो पकड़ने वाला होगा वह पकड़ेंगे। ~~औ~~ और उनकी बैटरी भीचार्ज होगी। दिप प्रति दिन युक्तियां तो समझाते रहते हैं। बाकी समझना न समझना वह तोनम्बरवार स्टुडन्ट पर हैं। बहुत तरावत माल मिलता है कोई हज़म भी कर सके ना। बड़ी भारी लाटरी है। जन्म-जन्मान्तर कल्प-कल्पान्तर का ~~ह~~ लाटरी है तो उस पर पूरा अटेन्शन देना चाहिए।

बाप से कैरेन्ट ले रहे हैं। बाप भी भृकुटि के बीच में बैठा है ना। तुमको भी अपने को आत्मा समझ बाप को यादकरना है न कि ब्रह्मा की आत्मा को। हम उन से योग लगा कर बैठते हैं। इनको देखते हुये भी हम उनको देखते हैं। आत्मा की बात है ना। अच्छा बच्चों को बापदादा कायाद प्यार गुडमार्निंग।

पत्र की कापी:-

********** कलकत्ते दोनो रूहानी वन्डरफुलईश्वरीय विश्व-विद्यालय केपदमा-पदमभाग्यशालीपुरुषार्थी बच्चों प्रितरूहानी बाप-दादा का याद प्यार बाद समाचार किदिन प्रति दिन पदमापदमभाग्यशाली विश्व के मालिक बनने वालेज्ञान गुलजारी फूलअच्छे ही ज्ञान और योग कीखूशबूएं निकाल रहे हैं। ऐसे आपसमान भी बनते बनाते रहते हैं। हठयोगी हद के सन्यासियों के सामनेसहजराजयोगी बेहद के सन्यास का मुकाबला बहुत अच्छा है। जो एक दिन बेहद के सामने सिर झुकाना ही पड़ना ही है। अभी रावणराज्य में उनका राज्य है। उनको संगम युग का पता न है। अच्छा बच्चा देखनाकहीं माया बिल्ली कोई पायन्ट में हरा न देपूरी जीत पहननी है। जो 5 विकारों पर जीत सोजगत जीत नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो मुरलीसुनाते हैं सो मुरला पहले पढ़ अर्थ पूरा समझ बाद में समझाना है अच्छा पत्र कज का, सर्विससमाचार का, और भारती सर्विस समाचार कापाया। आपस में बहुत2 प्यार से चलना है। प्रेम का सागर बनो तो विश्व को प्रेम का सागर बनादेंगे। अच्छाब्र अब विदाई।